

250th Birth Anniversary of Raja Ram Mohan Roy

Raja Ram Mohan Roy was born on 22 May 1772 in Radhanagar, Hooghly district of West Bengal. He was one of the founders of the Brahmo Sabha in 1828. His influence was apparent in the fields of politics, public administration, education and religion. He was known for his efforts to abolish the practices of sati and child marriage and is considered to be the “Father of the Bengal Renaissance” by many historians.

Raja Ram Mohan Roy’s impact on modern Indian history was on account of efforts for revival of the pure and ethical principles of the Vedanta school of philosophy, as found in the Upanishads. He preached the unity of God, made early translations of Vedic scriptures into English, co-founded the Calcutta Unitarian Society and founded the Brahmo Samaj.

The Brahmo Samaj played a major role in reforming and modernizing the Indian society. He successfully campaigned against sati, the practice of burning widows. He endeavored to integrate Western culture with the best features of his own country’s traditions. He established a number of schools to popularize a modern system (effectively replacing Sanskrit based education with English based education) of education in India. He promoted a rational, ethical, non-authoritarian, this-worldly, and social reform Hinduism.

His writings also sparked interest among British and American Unitarians. During early rule of the East India Company, Ram Mohan Roy acted as a political agitator whilst employed by the East India Company.

Raja Ram Mohan Roy founded the Atmiya Sabha and the Unitarian Community to fight the social evils, and to propagate social and educational reforms in India. He was the man who fought against superstitions, a pioneer in Indian education and a trend setter in Bengali prose and Indian press. He crusaded against Hindu customs such as sati, polygamy, child marriage and the caste system, demanded property inheritance rights for women.

Roy’s political background and Devandra’s Christian influence influenced his social and religious views regarding reforms of Hinduism. He believed education to be an important tool for social reform. He also founded a number of educational institutions. He supported induction of western learning into Indian education. His most popular journal was the Sambad Kaumadi. It covered topics like freedom of the press, induction of Indians into high ranks of service and separation of the executive and judiciary. He died on 27 September 1833 at the age of 61 years.

Department of Posts is pleased to issue Commemorative Postage Stamp on 250th Birth Anniversary of Raja Ram Mohan Roy who fought against the caste system, untouchability, superstitions, social evils and for the pride of the country.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ : Mr. Sankha Samanta

Cancellation Cachet

Text : Based on information received from the proponent



भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



राजा राम मोहन राय की 250वीं जयन्ती
250th BIRTH ANNIVERSARY OF RAJA RAM MOHAN ROY

विवरणिका
BROCHURE

राजा राम मोहन राय की 250वीं जयंती

राजा राम मोहन राय का जन्म 22 मई, 1772 को पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के राधानगर में हुआ। वे वर्ष 1828 में स्थापित ब्रह्म सभा के संस्थापकों में से एक थे। राजनीति, लोक प्रशासन, शिक्षा और धर्म के क्षेत्रों में उनका स्पष्ट प्रभाव था। सती-प्रथा और बाल-विवाह जैसी कुप्रथाओं के उन्मूलन की दिशा में उनके प्रयासों के कारण अनेक इतिहासकार उन्हें 'बंगाल पुनर्जागरण का जनक' मानते हैं।

आधुनिक भारतीय इतिहास पर राजा राम मोहन राय का प्रभाव स्पष्ट है। उपनिषदों के अनुसार, वेदांत दर्शन के विशुद्ध और नैतिक सिद्धान्तों के पुनरुत्थान की दिशा में उनका प्रयास अति प्रभावी है। उन्होंने एकेश्वरवाद का प्रचार किया। वे, वैदिक ग्रंथों का अंग्रेजी में सर्वप्रथम अनुवाद करने वाले लोगों में शामिल थे। साथ ही वे, कलकत्ता यूनीटेरियन सोसाइटी के सह-संस्थापक और ब्रह्म समाज के संस्थापक भी थे।

भारतीय समाज में सुधार लाने और इसे आधुनिक बनाने में ब्रह्म समाज की प्रमुख भूमिका रही। राजा राम मोहन राय ने विधवाओं के अपने पति की चिता में जल जाने की कुरीति, सती प्रथा के विरुद्ध सफलतापूर्वक अभियान चलाया। उन्होंने देश की समृद्ध परंपराओं के सर्वश्रेष्ठ पहलुओं को पश्चिमी संस्कृति से जोड़ने का प्रयास किया। राजा राम मोहन राय ने भारत में शिक्षा की आधुनिक प्रणाली (संस्कृत आधारित शिक्षा के स्थान पर अंग्रेजी आधारित शिक्षा) को लोकप्रिय बनाने के लिए अनेक विद्यालय स्थापित किए। उन्होंने विवेकशील, नैतिक, गैर-अधिनायकवादी, इहलौकिक सामाजिक बदलाव वाले हिन्दुत्व को बढ़ावा दिया।

उनके लेखन ने ब्रिटिश और अमेरिकन एकेश्वरवादियों का भी ध्यान आकर्षित किया। ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रारंभिक शासन के दौरान, राम मोहन राय ने ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए कार्य करते हुए भी राजनीतिक आंदोलनकारी की भूमिका निभाई।

राजा राम मोहन राय ने सामाजिक बुराइयों से लड़ने और भारत में सामाजिक एवं शैक्षणिक सुधार के उद्देश्य से आत्मीय

सभा और एकेश्वर संप्रदाय की स्थापना की। उन्होंने अंधविश्वास के विरुद्ध आवाज बुलंद की और भारतीय शिक्षा पद्धति के लिए अग्रगामी भूमिका निभाई। वे, बंगाली गद्य एवं समूचे भारतीय प्रेस के क्षेत्र में पथ-प्रदर्शक भी रहे। उन्होंने, हिंदू समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे सती-प्रथा, बहु-विवाह, बाल-विवाह एवं जाति-प्रथा के विरुद्ध भी अभियान चलाया और संपत्ति के मामले में महिलाओं के लिए विरासती अधिकारों की मांग की।

राय की राजनीतिक पृष्ठभूमि और देवेन्द्र की ईसाई धर्म संबंधी विचारधारा ने हिन्दू धर्म में सुधारों के संबंध में उनके सामाजिक और धार्मिक विचारों पर गहरा प्रभाव डाला। उनका विश्वास था कि शिक्षा, सामाजिक सुधार के प्रयोजनार्थ एक महत्वपूर्ण साधन है। उन्होंने अनेक शैक्षणिक संस्थाओं की भी स्थापना की। साथ ही, उन्होंने भारतीय शिक्षा में पश्चिमी शिक्षण पद्धति को शामिल किए जाने का भी समर्थन किया। संवाद कौमुदी, उनका सर्वाधिक लोकप्रिय जर्नल था। इसके अंतर्गत प्रेस की स्वतंत्रता, प्रशासनिक सेवा के उच्च पदों पर भारतीयों को नियुक्त किए जाने और कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्रों का विभाजन जैसे अनेक विषयों को शामिल किया गया। 27 सितम्बर, 1833 को 61 वर्ष की आयु में राजा राम मोहन राय का निधन हो गया।

डाक विभाग, जाति-प्रथा, छुआछूत, अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष करने वाले समाज-सुधारक और देश के गौरव राजा राम मोहन राय की 250वीं जयंती पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक-टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ः श्री शंख सामंत

विवरणिका/विरूपण कैंसे

पाठ

: प्रस्तावक से प्राप्त सूचना के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	: 201600
Stamps Printed	: 201600
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00